कायप्रारूप विकृतियाँ (Somatoform Disorders) —

कायप्रारूप विकृति DSM-IV के Axis-I का एक प्रमुख विकृति है। इस विकृति में व्यक्ति उन दैहिक लक्षणों की शिकायत करता है, जिनमें दैहिक असमर्थताओं की उपस्थिति तो होती है परंतु इसका कोई शारीरिक या कायिक (somatic) आधार नहीं होता है परंतु रोगी को यह अनुभव होता है कि उनके लक्षण वास्तविक एवं वांछित हैं। कायप्रारूप विकृति के पहचान हेतु पाँच मापदंड बतलाये गये जो निम्नांकित हैं—

→ रोगी के दैहिक कार्यों में कुछ परिवर्तन हुआ हो जैसे- बहरापन, पक्षाघात (paralysis) आदि के लक्षण।

→ ऐसे लक्षणों का कोई दैहिक या स्नायविक आधार न हो अर्थात् बहरापन होने पर भी उसका कोई आंगिक या स्नायविक क्षति का कोई सबूत न हो।

→ इस बात का धनात्मक सबूत हो कि रोगी के दैहिक लक्षण मनोवैज्ञानिक कारकों से संबंधित हो।

→ रोगी में अपने दैहिक लक्षणों के प्रति विशेष चिंता का अभाव हो अर्थात् दैहिक क्षति के प्रति वह उदासीन हो।

→ रोगी द्वारा दिखाया जाने वाला चिंता उनके ऐच्छिक नियंत्रण से बाहर हो।

यदि रोगी में उपर्युक्त पाँच मापदंड के अनुरूप लक्षण दिखते हैं, तो निश्चित ही वह कायप्रारूप विकृति से ग्रस्त माना जायेगा।

कायप्रारूप विकृति के पाँच प्रकार बतलाये गये हैं—

- शरीर कुरूपता विकृति (Body Dysmorphic Disorder)
- रोगभ्रम (Hypochondriasis)
- कायिक विकृति (Somatization Disorder)
- कायप्रारूप दर्द विकृति (Somatoform Pain Disorder)
- रूपान्तर विकृति (Conversion Disorder) OR
  रूपान्तर हिस्टीरिया (Conversion Hysteria)

NOTES

Scanned with CamScanner

शारीरिक कुरूपता विकृति (Body dysmorphic Disorder)

इस विकृति में रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि उसके चेहरे में कोई कल्पित दोष उत्पन्न हो रहे हैं जैसे - उसकी नाक दिनों दिन लंबी होती जा रही है या उसके होंठ लटकते जा रहे हैं। यह उसकी कल्पना मात्र होती है और इससे रोगी अत्यधिक चिंतित रहता है, जिससे उसके दिन प्रतिदिन के जीवन में समस्याएँ होने लगती हैं और समायोजन में बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

रोगभ्रम (Hypochondriasis)

इस विकृति में रोगी अपने स्वास्थ्य को लेकर अत्यधिक चिंतित रहता है। उसे लगता है कि उसे कोई न कोई शारीरिक बिमारी हो गयी है। इसे लेकर वह इतना अधिक चिंतित रहता है कि अपने दैनिक जीवन के साथ समायोजन में कठिनाई महसूस करने लगता है। DSM-IV के मापदंड के अनुसार इस तरह कि चिंता व्यक्ति में कम-से-कम छः महीनों तक बनी रहनी चाहिए तभी उसे रोगभ्रम की श्रेणी में रखा जा सकता है। जैसे - रोगी को लगता है कि उसे पेट में कोई भयानक रोग हो गया है और कभी लगता है सिर में कुछ गड़बड़ी हो गयी और कभी शरीर के दूसरे अंगों में रोग उत्पन्न होने का भ्रम होता है। इस विकृति में रोगी की शिकायत किसी एक अंग विशेष तक सीमित नहीं रहती है। जब रोगी से उसके लक्षण के बारे में पूछा जाता है, तो वह उसका सही-सही वर्णन करने में असमर्थ रहता है। मेडिकल जाँच से भी जब यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी आशंकाएँ बेबुनियाद हैं, फिर भी उसे यह विश्वास नहीं होता है कि उसे कोई रोग नहीं है।

कायिक विकृति (Somatization Disorder) —

यह एक ऐसी कायप्रारूप विकृति है जिसमें रोगी को बिना किसी तरह के आंगिक दोष के ही अनेक प्रकार के दैहिक शिकायतें होती हैं इस रोग में रोगी की बहुकालिक शिकायतें होती हैं. यद्यपि शारीरिक रूप से वह स्वस्थ रहता है। इस रोग के आठ लक्षण बतलाये गये हैं, जो ~~मिलते हैं~~ निश्चित रूप से होते हैं, जिनमें है।

→ चार तरह के दर्द के लक्षण — इसमें दर्द सिर, पेट, पीठ, छाती, मासिक स्राव के दौरान, पेशाब करने के समय, लैंगिक क्रिया आदि में से किसी चार से संबद्ध हो सकता है।

→ दो जठरांत्र लक्षण — जैसे- मितली, कै, डायरिया, पेट फूलना आदि अवश्य हुए हों।

→ एक लैंगिक लक्षण — इसमें कम-से-कम एक लक्षण जैसे- लैंगिक तटस्थता, स्खलन समस्याएँ, अनियमित मासिक स्राव, मासिक स्राव में अत्यधिक रक्त निकलना आदि अवश्य हुए हों।

→ एक कूट-स्नायविक लक्षण (One Psuedoneurological symptoms) कम-से-कम एक कूट स्नायविक लक्षण जैसे- अंधापन, द्विदृष्टि, बहरापन, स्पर्श संवेदन की कमी, विभ्रम, पक्षाघात, कंठ में दर्द, खाना खाते वक्त निगलने में कठिनाई, पेशाब करने में कठिनाई आदि अवश्य हुए हों।

DSM-IV के मापदंड के अनुसार कायिक विकृति की शुरुआत निश्चित रूप से 30 वर्ष के उम्र से पहले होती है। इस रोग को Briquet's Syndrome भी कहा जाता है, क्योंकि इस रोग का सबसे पहले वैज्ञानिक अध्ययन फ्रेंच मनश्चिकित्सक Pierre Briquet ने किया था।

कायप्रारूप दर्द विकृति या साइकालजिया (Somatoform Pain Disorder or Psychalgia) —

इस विकृति में रोगी गंभीर एवं स्थायी तौर पर दर्द का अनुभव करता है, जिसका कोई दैहिक आधार नहीं होता है। इस तरह का दर्द प्रायः हृदय या अन्य महत्वपूर्ण अंगों के क्षेत्र से संबद्ध होता है। गहन मेडिकल जाँच से भी रोगियों के दर्द का कोई स्पष्ट आधार नहीं मिलता है।

Scanned with CamScanner

313-052

9

NOVEMBER
SATURDAY

MENTS

सामान्यतः इस प्रकार के दर्द की उत्पत्ति व संबंध व्यक्ति के दुखद परिस्थिति, संघर्ष या तनाव से होता है. या एक व्यक्ति अन्य लोगों की सहानुभूति या ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता है. तो होते देखा गया है। मनश्चिकित्सकों को इस रोग के निदान में काफी परेशानी होती है. क्योंकि दर्द एक आत्मनिष्ठ अनुभूति है। अतः यह जान पाना मुश्किल होता है कि व्यक्ति में होने वाला दर्द का स्वरूप काल्पनिक है या वास्तविक है।

Scanned with CamScanner